प्रारंभिक परीक्षा

हीमोफीलिया और प्रोफिलैक्सिस

संदर्भ
प्रोफिलैक्सिस को हीमोफीलिया के लिए स्वर्ण मानक उपचार के रूप में रेखांकित किया गया है।

हीमोफीलिया A क्या है?
- **एक आनुवंशिक रक्तस्राव विकार जिसमें रक्त का ठीक से थक्का नहीं जमता।**
- **फैक्टर VIII**, एक आवश्यक थक्का बनाने वाले प्रोटीन की कमी के कारण होता है।

कारण और थक्के बनने की प्रक्रिया -
- सामान्य रक्त का थक्का बनने की प्रक्रिया में लगभग 20 थक्के बनाने वाले कारकों की एक श्रृंखला **(कोएग्युलेशन कैस्केड)** शामिल होती है।
- इनमें से किसी कारक की कमी या खराबी अत्यधिक रक्तस्राव के जोखिम को बढ़ा देती है।
- **हीमोफीलिया A में शरीर फैक्टर VIII का अपर्याप्त उत्पादन करता है।**

आनुवंशिक संचरण -
- आमतौर पर यह माता-पिता से परिवर्तित जीन के माध्यम से विरासत में मिलता है।
- परिवर्तित जीन वाले पुरुषों में लक्षण दिखाई देते हैं।
- महिलाएं प्रायः वाहक होती हैं, उनमें हल्के लक्षण हो सकते हैं या कोई लक्षण नहीं भी हो सकते हैं, लेकिन फिर भी उन्हें रक्तस्राव संबंधी समस्याएं हो सकती हैं।

लक्षण -
- **मुख्य लक्षण:** लंबे समय तक रक्तस्राव, जो अक्सर शिशुओं में खतना के बाद देखा जाता है।
- जब बच्चा रेंगना या चलना शुरू करता है तो रक्तस्राव की प्रवृत्ति अधिक दिखाई देने लगती है।
- हल्के मामलों में यह तब तक नजर नहीं आता जब तक कोई चोट या सर्जरी न हो।
- आंतरिक रक्तस्राव शरीर में कहीं भी हो सकता है।
- **सामान्य संकेतों में शामिल हैं:**
    - जोड़ों से रक्तस्राव (दर्द, सूजन)
    - मूत्र या मल में रक्त
    - आसानी से चोट लगना
    - जठरांत्र या मूत्र पथ से रक्तस्राव
    - नाक से खून आना
    - कटने, सर्जरी या दंत प्रक्रियाओं के बाद लंबे समय तक रक्तस्राव
    - बिना चोट के स्वतःस्फूर्त रक्तस्राव

उपचार -
- **मुख्य तरीका:** फैक्टर VIII प्रतिस्थापन चिकित्सा।
- इसमें रक्तप्रवाह में सांद्रित फैक्टर VIII को इंजेक्ट किया जाता है।
- यह रक्त के थक्के को सामान्य रूप से जमाने में मदद करने के लिए गायब प्रोटीन को पुनर्स्थापित करता है।

हीमोफीलिया में प्रोफिलैक्सिस(Prophylaxis)
परिभाषा -
- **प्रोफिलैक्सिस वह नियमित, रोकथाम प्रक्रिया है जिसमें थक्के बनाने वाले फैक्टर का संकेंद्रित**

रूप से संचार किया जाता है, ताकि रक्तस्राव की घटनाओं को पहले से रोका जा सके, न कि उनके होने के बाद उपचार (ऑन-डिमांड थेरेपी) किया जाए।

उद्देश्य -

- स्वतःस्फूर्त रक्तस्राव को रोकने के लिए आवश्यक थक्के कारक के स्तर को सीमा से ऊपर बनाए रखता है।
- इसका उद्देश्य जोड़ों, मांसपेशियों और अंगों को दीर्घकालिक क्षति से बचाना है।
- यह रोगियों को रक्तस्राव के निरंतर भय के बिना सक्रिय, लगभग सामान्य जीवनशैली जीने में सक्षम बनाता है।

यह काम किस प्रकार करता है?

- **फैक्टर VIII** (**हीमोफीलिया-A के लिए**) या **फैक्टर IX** (**हीमोफीलिया-B के लिए**) के निर्धारित अंतःशिरा इंजेक्शन(intravenous injections) शामिल हैं।
- इसके अलावा, नए गैर-कारक उपचारों (जैसे, चमड़े के नीचे इंजेक्शन) का भी उपयोग किया जा सकता है, जो थक्के को पुनः संतुलित करते हैं।
- आमतौर पर **हीमोफीलिया-A** के लिए प्रति सप्ताह 2-3 बार किया जाता है, जबकि लंबे अर्ध-जीवन के कारण **हीमोफीलिया-B** के लिए कम बार किया जाता है।

प्रोफिलैक्सिस के प्रकार -

- **प्राथमिक प्रोफिलैक्सिस**: दूसरे जोड़ से रक्तस्राव से पहले और 3 वर्ष की आयु से पहले शुरू किया जाता है, ताकि जोड़ की क्षति को शुरू से ही रोका जा सके।
- **द्वितीयक प्रोफिलैक्सिस**: कुछ रक्तस्राव के बाद लेकिन दीर्घकालिक जोड़ क्षति शुरू होने से पहले शुरू किया जाता है।
- **तृतीयक प्रोफिलैक्सिस**: जोड़ों की बीमारी स्थापित होने के बाद शुरू किया जाता है, ताकि आगे की क्षति को रोका जा सके और कार्य में सुधार किया जा सके।

ऑन-डिमांड थेरेपी पर लाभ -

- बार-बार होने वाले रक्तस्राव से जोड़ों और मांसपेशियों को होने वाली क्षति से बचाता है।
- स्वतःस्फूर्त रक्तस्राव और अस्पताल में भर्ती होने की संख्या कम हो जाती है।
- गतिशीलता, स्वतंत्रता, तथा स्कूल, कार्य और सामाजिक जीवन में भागीदारी में सुधार होता है।
- दीर्घकालिक संयुक्त स्वास्थ्य बनाए रखता है और दिव्यांगता को विलंबित करता है या टालता है।
- जटिलताओं से बचकर दीर्घकाल में समग्र स्वास्थ्य देखभाल लागत को कम करता है।

वैश्विक बनाम भारतीय परिदृश्य -

- विकसित देशों में: लगभग 90% हीमोफीलिया रोगी प्रोफिलैक्सिस पर हैं, तथा उनकी जीवन प्रत्याशा लगभग सामान्य है।
- कम जागरूकता, सीमित संसाधनों और उच्च लागत के कारण ऑन-डिमांड थेरेपी अभी भी सबसे आम है। कुछ राज्यों ने हाल ही में बच्चों के लिए प्रोफिलैक्सिस शुरू किया है।

कार्यान्वयन में चुनौतियाँ -

- थक्के कारक या गैर-कारक उपचारों की उच्च लागत।
- नियमित शिरापरक पहुंच की आवश्यकता, जो बच्चों के लिए कठिन हो सकती है।
- घरेलू प्रशासन के लिए रोगी और परिवार को प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।
- कम संसाधन वाले क्षेत्रों में व्यापक नीतिगत समर्थन और निदान कवरेज का अभाव।

दीर्घकालिक प्रभाव -

- दर्द, दिव्यांगता और चिंता को कम करके जीवन की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार होता है।

- बच्चों में शारीरिक गतिविधि और सामान्य विकास को प्रोत्साहित करता है।
- दीर्घकालिक जटिलताओं जैसे क्रोनिक आर्थ्रोपैथी (जोड़ों की बीमारी) को कम करता है।
- हीमोफीलिया देखभाल को "शून्य रक्तस्राव" के लक्ष्य की ओर ले जाना।

स्रोत: द हिंदू

भूजल संदूषण(Groundwater Contamination)

संदर्भ

भारत में बढ़ता भूजल संदूषण संकट एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंता का विषय बन गया है, तथा खतरनाक प्रदूषकों को कई राज्यों में दीर्घकालिक बीमारियों से जोड़ा जा रहा है।

भूजल का महत्व -

- भूजल **ग्रामीण पेयजल की 85%** तथा **सिंचाई की 65%** आवश्यकताओं को पूरा करता है।
- इसे पारंपरिक रूप से शुद्ध माना जाता था, लेकिन अब तेजी से प्रदूषित हो रहा है।

भूजल कैसे दूषित होता है -

- **अत्यधिक उर्वरक उपयोग** - रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से जलभृतों में नाइट्रेट्स निकलते हैं।
- **सेप्टिक टैंक रिसाव** - खराब रखरखाव या लीक सेप्टिक सिस्टम अपशिष्ट घुसपैठ की अनुमति देता है।
- **औद्योगिक अपशिष्ट** - अनुपचारित अपशिष्ट के निर्वहन से सीसा, कैडमियम और पारा जैसी भारी धातुएं निकलती हैं।
- **सीवेज घुसपैठ** - अनुपचारित सीवेज भूजल में रिसता है, जिससे रोगाणु फैलते हैं।
- **जल का अत्यधिक दोहन** - गिरते जल स्तर प्रदूषकों को केंद्रित करते हैं और प्राकृतिक विषाक्त पदार्थों (जैसे, आर्सेनिक, यूरेनियम) को गतिशील करते हैं।
- **भूजनित स्रोत** - कुछ क्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले खनिज भूजल में फ्लोराइड, आर्सेनिक और यूरेनियम छोड़ते हैं।
- **भूमिगत ईंधन रिसाव** - भंडारण टैंकों से पेट्रोलियम या रासायनिक रिसाव स्थानीय जलभृतों को दूषित करता है।

भारत में भूजल संदूषण की स्थिति (CGWB 2024 रिपोर्ट पर आधारित) -

- **भौगोलिक प्रसार** - भारत भर में 440 से अधिक जिलों में संदूषण की सूचना मिली।
- **नाइट्रेट्स -** 20% से अधिक नमूनों में असुरक्षित स्तर; प्रमुख कारण: उर्वरक और सेप्टिक रिसाव।
- **फ्लोराइड -** 9% से अधिक नमूनों में अधिकता; राजस्थान, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना में गंभीर → दंत एवं कंकाल फ्लोरोसिस का कारण बनता है।
- **आर्सेनिक** - पंजाब, बिहार और गंगा क्षेत्र में उच्च स्तर → कैंसर और तंत्रिका संबंधी क्षति से जुड़ा हुआ।
- **यूरेनियम** – पंजाब, आंध्र प्रदेश और राजस्थान के कुछ हिस्सों में >100 पीपीबी → फॉस्फेट उर्वरकों और अत्यधिक दोहन (over-extraction) के कारण
- **लोहा एवं भारी धातुएं** - 13% नमूने सुरक्षित सीमा से ऊपर; सीसा, कैडमियम, पारा औद्योगिक उत्सर्जन से उत्पन्न हुए।
- **स्वास्थ्य प्रभाव हॉटस्पॉट** –
    - **बागपत, उत्तर प्रदेश:** गुर्दे की विफलता का कारण औद्योगिक अपशिष्ट है।
    - **जालौन, उत्तर प्रदेश:** संदिग्ध ईंधन रिसाव से पेट्रोलियम जैसा संदूषण।
    - **पैकरापुर, ओडिशा:** सीवेज-दूषित भूजल से बड़े पैमाने पर बीमारी।

स्रोत: द हिंदू

ग्रेट बैरियर रीफ(Great Barrier Reef)

संदर्भ

ग्रेट बैरियर रीफ में कठोर प्रवाल आवरण में लगभग 40 वर्षों में सबसे तीव्र गिरावट देखी गई है, जो जलवायु परिवर्तन से प्रेरित ताप तनाव, चक्रवातों और प्रवाल-भक्षी तारामछलियों के प्रकोप के कारण हुई है।

ग्रेट बैरियर रीफ -

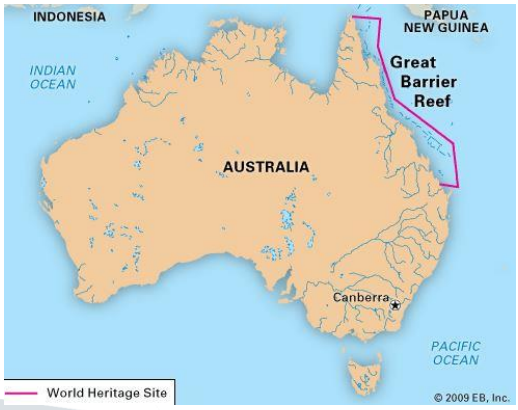

- **यह ऑस्ट्रेलिया (प्रशांत महासागर) के उत्तरपूर्वी तट से दूर कोरल सागर में स्थित है।**
- **विश्व का सबसे लम्बा और सबसे बड़ा रीफ परिसर; साथ ही पृथ्वी पर सबसे बड़ी जीवित संरचना।**
- उत्तर-पश्चिम-दक्षिण-पूर्व दिशा में लगभग **2,000 किमी तक फैली हुई** है।
- **इसे 1981 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया।**
- ग्रेट बैरियर रीफ मरीन पार्क प्राधिकरण द्वारा प्रबंधित।

ऑस्ट्रेलिया की अन्य महत्वपूर्ण भौगोलिक विशेषताएँ -

- **उलुरु (आयर्स रॉक) -** उत्तरी क्षेत्र में प्रतिष्ठित बलुआ पत्थर का एकाश्म।
- **ग्रेट डिवाइडिंग रेंज** - ऑस्ट्रेलिया की पूर्वी तट पर सबसे लंबी पर्वत श्रृंखला।
- **मरे-डार्लिंग बेसिन** - देश की सबसे बड़ी नदी प्रणाली।
- **सिम्पसन रेगिस्तान** - लाल रेत के टीलों के लिए प्रसिद्ध।
- **तस्मान सागर** - ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड को अलग करता है।
- **कोरल सागर** - ग्रेट बैरियर रीफ का घर।
- **नुलारबोर मैदान** - दुनिया की सबसे लंबी सीधी रेलवे पटरी वाला विशाल चूना पत्थर का पठार।
- **किम्बरली क्षेत्र** - ऊबड़-खाबड़, सुदूर उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र जिसमें नाटकीय घाटियाँ और झरने हैं।
- **ग्रेट विक्टोरिया रेगिस्तान** - ऑस्ट्रेलिया का सबसे बड़ा रेगिस्तान।
- **केप यॉर्क प्रायद्वीप** - सुदूर उत्तर क्वींसलैंड में उष्णकटिबंधीय जंगल।

स्रोत: द हिंदू

नाउरू(Nauru)

संदर्भ

नाउरू ने जलवायु कार्रवाई के लिए धन जुटाने हेतु एक नए **"जलवायु-प्रतिरोधी नागरिकता(climate resilience citizenship)" कार्यक्रम के तहत अपने पहले पासपोर्ट बेचे हैं।**

नाउरू के बारे में -

- **स्थान एवं क्षेत्र**: ओशिनिया में द्वीप राष्ट्र और सूक्ष्म राज्य, दक्षिण-पश्चिमी प्रशांत महासागर में स्थित।
    - **दुनिया का सबसे छोटा गणराज्य**

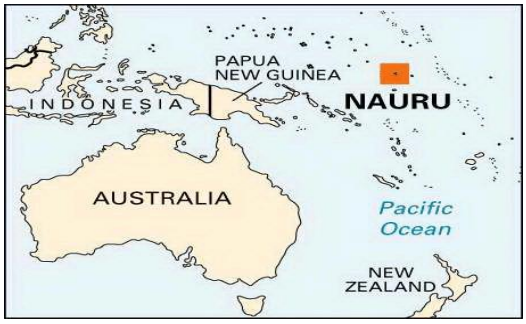

स्रोत: द हिंदू

पहल(प्रत्यक्ष हस्तांतरित लाभ) - एलपीजी योजना का प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण

संदर्भ

भारत सरकार ने अपनी पहल योजना के तहत 4 करोड़ से अधिक नकली या निष्क्रिय घरेलू एलपीजी कनेक्शनों को बंद कर दिया है।

योजना के बारे में -

- **शुभारंभ:** 1 जनवरी 2015 को पूरे देश में लागू किया गया।
- **मंत्रालय**: पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय।
- **उद्देश्य:** पारदर्शिता सुनिश्चित करने, धन के दुरुपयोग को रोकने तथा लीकेज को कम करने के लिए एलपीजी सब्सिडी को सीधे उपभोक्ताओं के बैंक खातों में स्थानांतरित करना।
- **मान्यता:** दुनिया की सबसे बड़ी नकद हस्तांतरण योजना के रूप में **गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स** में सूचीबद्ध।
- **विशेषताएँ**:
    - यह आधार-लिंक्ड और गैर-आधार-लिंक्ड दोनों खातों के लिए काम करता है।
    - सब्सिडी स्व-चयन के साथ उपयोगकर्ताओं को सशक्त बनाता है।
    - वितरण में सुधार और उपभोक्ता अधिकारों की सुरक्षा।
    - धोखाधड़ी को रोकता है और कुशल सब्सिडी प्रबंधन सुनिश्चित करता है।
- **पात्रता:**
    - एलपीजी उपयोगकर्ता होना चाहिए।
    - आवेदक और पति/पत्नी की संयुक्त कर योग्य आय पिछले वित्तीय वर्ष में ₹10,00,000 से अधिक नहीं होनी चाहिए (आयकर अधिनियम, 1961 के अनुसार)।
- **लाभ:**
    - **प्रत्यक्ष सब्सिडी हस्तांतरण** - लाभार्थी के बैंक खाते में सब्सिडी का स्वचालित जमा।
    - **बेहतर उपलब्धता** - वास्तविक उपभोक्ताओं के लिए नए एलपीजी कनेक्शन तक बेहतर पहुंच।
    - **स्वास्थ्य लाभ** - अशुद्ध खाना पकाने वाले ईंधन पर निर्भरता कम होती है, घर के अंदर प्रदूषण कम होता है और श्वसन संबंधी समस्याएं कम होती हैं, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं और बच्चों के लिए।

स्रोत: सीएनबीसी

समाचार संक्षेप में

भारतजेन एआई(BharatGen AI)

समाचार? लोकसभा द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, भारतजेन जून 2026 तक सभी 22 अनुसूचित भारतीय भाषाओं को कवर करेगा।

इसके बारे में -

- **लॉन्च: आधिकारिक तौर पर जून 2025 के आसपास भारतजेन शिखर सम्मेलन के दौरान इसकी शुरुआत की गई।**
- **भारत का पहला स्वदेशी रूप से विकसित, सरकार द्वारा वित्तपोषित मल्टीमॉडल वृहद भाषा मॉडल (LLM)।**
- इसे टेक्स्ट, स्पीच और इमेज के तौर-तरीकों को संसाधित करने और उत्पन्न करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो विशेष रूप से भारत की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता के लिए अनुकूलित है।
- **प्रमुख अवसंरचना:** भारत डेटा सागर - एक बहुभाषी डेटासेट भंडार।
- यह पहल विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के राष्ट्रीय अंतःविषय साइबर-भौतिक प्रणाली मिशन (एनएम-आईसीपीएस) के तहत शुरू की गई है, जिसमें आईआईटी बॉम्बे में आईओटी और आईओई के लिए टीआईएच फाउंडेशन के नेतृत्व में अनुसंधान और कार्यान्वयन किया गया है, जिसे आईआईटी, आईआईएम और आईआईआईटी के एक संघ द्वारा समर्थित किया गया है।
- **वर्तमान भाषा समर्थन**: हिंदी, मराठी, तमिल, मलयालम, बंगाली, पंजाबी, गुजराती, तेलुगु और कन्नड़ सहित 9 भारतीय भाषाएँ।

स्रोत: बिज़नेस टुडे

स्मिथोफिस लेप्टोफैसिआटस(Smithophis leptofasciatus)

समाचार? मिजोरम विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं की एक टीम ने **स्मिथोफिस लेप्टोफैसिआटस (मिजो में रूहरुल)** नामक **बरसाती साँप की एक नई प्रजाति की खोज** की है।

इसके बारे में -

- **प्रमुख विशेषताएँ:**
  - चमकदार काला शरीर, जिस पर क्रीम-सफेद या पीला-नीबू रंग की संकरी और अधूरी क्षैतिज धारियाँ होती हैं।
  - रात्रिचर और अर्ध-जलीय जीवन शैली।
  - मिजोरम से वर्णित तीसरी स्मिथोफिस प्रजाति (एस. एटेम्पोरेलिस और एस. मिजोरामेंसिस के अलावा)।
  - बहते पानी और पत्तियों की परतों के पास देखे जाने की प्रवृत्ति।

स्रोत: TOI

संपादकीय सारांश

क्या भारतीय अर्थव्यवस्था पूर्णतः संतुलित है?

संदर्भ

- कुछ सप्ताह पहले, भारत के वित्त मंत्रालय ने भारतीय अर्थव्यवस्था को "**गोल्डीलॉक्स स्थिति**" में बताया।
  - हालांकि, भारतीय अर्थव्यवस्था के कुछ अधिक सूक्ष्म और ऐतिहासिक जानकार विशेषज्ञ इस तथाकथित संतुलन को चुनौती देते हैं, जिसे वे गहरे संरचनात्मक असंतुलनों को छुपाने वाला मानते हैं।

अर्थशास्त्र में "गोल्डीलॉक्स स्थिति" से क्या तात्पर्य है?

- इसमें आमतौर पर निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं:
  - मध्यम और सतत आर्थिक वृद्धि
  - कम और स्थिर मुद्रास्फीति
  - सहायक मौद्रिक स्थितियाँ जो व्यवसाय या उपभोक्ता खर्च को बाधित न करें

सरकार ने यह दावा क्यों किया कि भारत गोल्डीलॉक्स स्थिति में है?

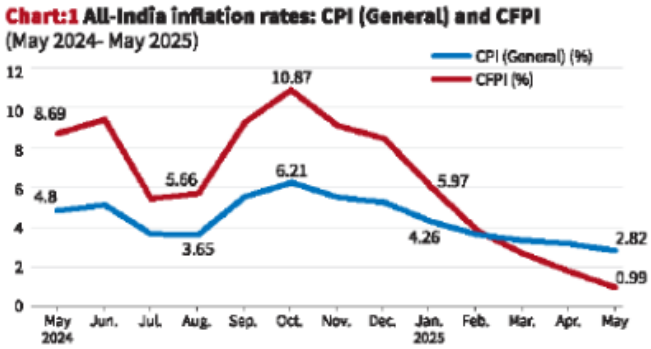

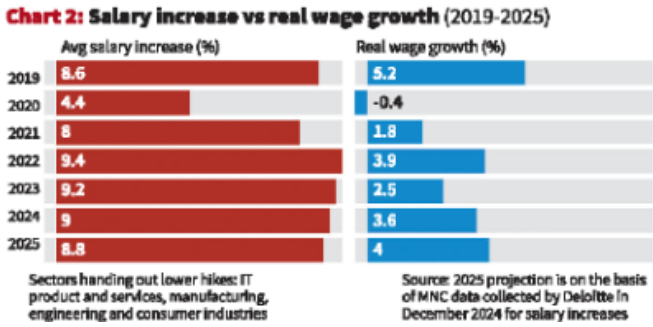

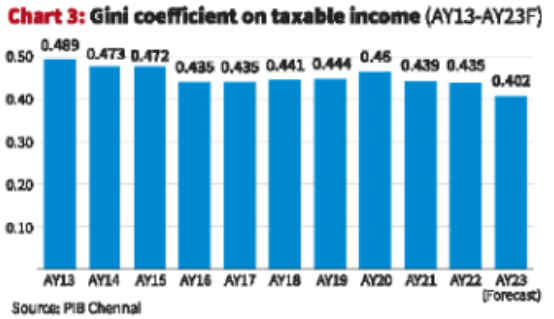

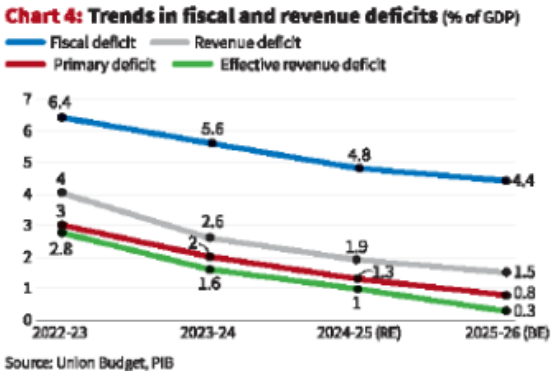

वित्त मंत्रालय ने बताया:

- **उच्च जीडीपी वृद्धि**: वित्त वर्ष 2024 में 7.6% - विश्व स्तर पर सबसे तेज।
- **निम्न शीर्ष सीपीआई मुद्रास्फीति**: मई 2025 में 2.82% तक, जो आरबीआई की लक्ष्य सीमा के भीतर है।
- **ब्याज दरों में वृद्धि**: मौद्रिक स्थितियों में सुधार की उम्मीद, जिससे निवेश को बढ़ावा मिलेगा।
- **स्थिर कॉर्पोरेट आय**: मजबूत व्यावसायिक प्रदर्शन का संकेत।
- लचीले मैक्रो फंडामेंटल्स के साथ भारत की 3.6 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था को मान्यता।

"गोल्डीलॉक्स" दावे के विरुद्ध तर्क -

- **अस्थिर खाद्य मुद्रास्फीति से परिवारों को नुकसान:** खाद्य मुद्रास्फीति (उपभोक्ता खाद्य मूल्य सूचकांक (सीएफपीआई)) अक्सर सामान्य मुद्रास्फीति से बहुत अधिक रही है। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई), उदाहरण के लिए, अक्टूबर 2024 में 10.87% बनाम सीपीआई 6.21%।
    - औसत घरेलू व्यय का लगभग 50% हिस्सा खाद्यान्न पर खर्च होता है, इसलिए समग्र CPI कम होने के बावजूद इससे वास्तविक क्रय शक्ति कम हो जाती है।
- **स्थिर वास्तविक वेतन वृद्धि:** नाममात्र वेतन वृद्धि मुद्रास्फीति द्वारा संतुलित हो जाती है - उदाहरण के लिए, 2023 में 9.2% की वृद्धि से केवल 2.5% वास्तविक वृद्धि हुई।
    - कुछ वर्षों में तो वास्तविक मजदूरी वृद्धि नकारात्मक भी देखी गई।
    - निम्न और मध्यम आय वर्ग पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, तथा उपभोग मांग पर अंकुश लगता है।
- **लगातार आय असमानता:** गिनी गुणांक कागज पर तो सुधर रहा है, लेकिन ज्यादातर औपचारिक कर योग्य आय को दर्शाता है - अनौपचारिक क्षेत्र की वास्तविकताएं बदतर हैं।
    - महामारी के बाद की रिकवरी **K-आकार की है** - अमीर लोग समृद्ध होते हैं, गरीब परिवार पिछड़ जाते हैं।
- **राजकोषीय बाधाएं:** राजकोषीय घाटा अभी भी उच्च है (2025-26 में 4.4% अनुमानित) तथा सार्वजनिक ऋण-जीडीपी ~81% है।
    - उच्च उधारी से निजी निवेश में कमी आने का जोखिम है और सामाजिक क्षेत्र में व्यय सीमित हो सकता है

आगे की राह -

- **खाद्य मुद्रास्फीति की अस्थिरता को नियंत्रित करना:** आपूर्ति श्रृंखला, बफर स्टॉक और फसल विविधीकरण को मजबूत करना।
    - बेहतर मौसम जोखिम प्रबंधन।
- **वास्तविक मजदूरी वृद्धि को बढ़ावा देना:** श्रम-प्रधान विनिर्माण को समर्थन देना।
    - एमएसएमई विकास और कौशल विकास को प्रोत्साहित करना।
- **असमानता का समाधान:** सामाजिक सुरक्षा जाल का विस्तार करना।
    - सार्वभौमिक गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा में निवेश करना।
- **राजकोषीय स्थिरता सुनिश्चित करना:** आवश्यक व्यय में कटौती किए बिना धीरे-धीरे घाटे को कम करें।
    - कर आधार को व्यापक बनाना तथा अनुपालन में सुधार करना।
- **समावेशी विकास को बढ़ावा देना:** ग्रामीण बुनियादी ढांचे और छोटे शहरों में रोजगार सृजन पर ध्यान केंद्रित करना।
    - कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करना।

स्रोत: द हिंदू